ABSTRACT

शोध-सार

SANJEEV KE KATHA SAHITYA KA SAMAJSHASTRIYA ANUSHILAN

संजीव के कथा-साहित्य का समाजशास्त्रीय अनुशीलन

प्रस्तुत शोध प्रबंध समाज में व्याप्त विविध जटीलतम समीकरणों के सरलतम व्याख्या के प्रति संवेदनशील होने तथा उनसे जुड़े रहने की प्रक्रिया का द्योतक है। आजकल साहित्य विश्लेषण की प्राचीन परंपरा - आंतरिक संरचना यानी बिंब, प्रतीक, लक्षण, लय, भाषा, चरित्रांकन जैसी विशुद्ध साहित्यिक एवं सौंदर्यवादी दृष्टिकोण से ऊपर उठकर इसके समाजशास्त्रीय चिंतन पर जोर देने की आवश्यकता है। समाजशास्त्रीय चिंतन साहित्य को उसके सामाजिक जिम्मेदारियों से जोड़ता है जबकि विशुद्ध कलावादी इसे किसी चरित्रांकन, कथानक या रंगीन मिजाजी सामग्री के रूप में पेश करने से भी नहीं हिचकते हैं। मानवता की रक्षा, वर्गभेद, आर्थिक विषमता का विनाश, सामाजिक समधर्मिता की स्थापना, शोषण-मुक्त समाज का निर्माण ही वह सौंदर्य है जिसे हम साहित्य के जरिये प्राप्त कर सकते हैं। अतः प्रस्तुत शोध-प्रबंध में संजीव के कथा-साहित्य को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया गया है।

वस्तुतः देखा जाये तो प्राचीनकाल से ही साहित्यिक रचनाओं में समाज प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से थोड़े-बहुत ही सही उपस्थित रहा है। परंतु वर्तमान समय में सामाजिक संदर्भ और राजनीतिक परिवेश का जितना ज्यादा प्रभाव साहित्य पर पड़ा है, उतना पहले कभी नहीं पड़ा। लेखक की अपनी सामाजिक परिस्थिति का प्रभाव भी उसकी रचनाओं में विभिन्न संबंधों के रूप में पड़ती है। समाजशास्त्र का ज्ञान उद्योग एवं पूँजी के फलस्वरूप उत्पन्न हुए सामाजिक समस्याओं का वैज्ञानिक पद्धति से समाधान के लिए है। समाजशास्त्र का संबंध मूलतः सामाजिक जीवन और उसके पारस्परिक संबंधों से है। इन सामाजिक संबंधों के कारण ही सामाजिक अंतर्क्रियाएँ होती हैं। अतः समाजशास्त्र के अंतर्गत समाज की उत्पत्ति, सामाजिक संस्थाएँ, इनकी प्रणालियाँ एवं संरचनाएँ, बदलते सामाजिक संबंध, जाति-पाति, परंपराएँ, रीति-रिवाज, नियम, परिवार, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक प्रभाव इत्यादि को जानने का प्रयत्न कर सकते हैं। प्रत्येक रचनाकार अपने समय की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों का देन होता है। उसकी रचनाओं पर उसकी विकासोन्मुखी चेतना, मानवीय संवेदना और प्राकृतिक सौंदर्य का भी प्रभाव पड़ता है। संजीव का जीवन उनके व्यापक अनुभव फलक के साथ किसी न किसी रूप में उनके कथा-साहित्य में रचता-बसता है। अपनी लेखनी के माध्यम से उन्होंने उपेक्षित और अभिशप्त संदर्भों को वाणी दिया। दलित, उपेक्षित और अछूत लोग, आदिवासी, किसान, कलाकार के पक्ष में खड़ा होकर अन्याय, अत्याचार, हिंसा, अपराध, उत्पीड़न, अवसरवादिता, अराजकता, भ्रष्टाचार, सूदखोरी, माफियातंत्र, ठेकेदारी, सरकारी संपत्ति की लूट आदि विषयों को उद्घाटित किया। नये-नये कथा-क्षेत्रों के तलाश में इन्हें बहुत भाग-दौड़ करना पड़ता है। मैदान, पहाड़, समुद्र, स्पेश, गाँव, शहर, कस्बा, सामंत, सेठ, मजदूर, अनछुए अंचल, उपेक्षित लोक कलाकार, सर्कस, इलिगल कोल माइनिंग, झारखंड आंदोलन, शोध, अमरत्व, टेस्ट ट्यूब बेबी आदि को विषय बनाकर उन्होंने समकालीन यथार्थ को पूरे परिप्रेक्ष्य में उद्घाटित करने का प्रयास किया है। हार या जीत की परवाह किये बिना जुल्म के खिलाफ लड़ना ही बहादुरी है। इनके यहाँ हार भी शृंगार है। कठिन फिल्डवर्क और होमवर्क के कारण कहानियों में पाठकों को बाँधे रखने और प्रभावित करने की अद्भुत क्षमता है। दोहराव का जोखिम उठाकर भी ये समसामयिक समस्याओं को उठाते हैं परंतु कहीं भी दोहराव बोझिल नहीं है। साहित्य को अश्लिलता से दूर रखने और उसका स्तर बचाये रखने के लिए वे हंस के संपादक राजेन्द्र यादव पर भी उँगली उठाने से भी नहीं हिचकते हैं। वे सिर्फ समस्याओं को उजागर ही नहीं करते अपितु उसका समाधान भी बताते हैं। जैसे डाकू समस्या के मूल में असमान भूमि वितरण प्रणाली और बेरोजगारी। वे समाज में परिवर्तन लाना चाहते हैं और इसके लिए आंदोलन, संगठन और विरोध का स्वर ही उनका प्रमुख हथियार है। इनकी कहानियों में सूचनाएँ बहुत अधिक हैं परंतु वे कहीं भी कथारस को बाधित या पाठक को आतंकित नहीं करती हैं। इनके यहाँ अन्याय, शोषण के खिलाफ विरोध का स्वर मुखर करने वाली नारी ही दुनिया की सबसे हसीन औरत है। युवती के रूप सौंदर्य, उम्र, नैन-नक्श का यहाँ कोई अर्थ नहीं है। वे अपने कथा-साहित्य में विलुप्त हो रही शौर्य की परंपरा को तलाशते हैं। 'अपराध' कहानी में वे नक्सल पार्टी का समर्थन करते हुए व्यवस्था को कटघरे में खड़ा करते हैं परंतु पूत-पूत! पूत-पूत!! कहानी में वे पार्टी को खुद कटघरे में खड़ा करते हैं। 'फाँस' उपन्यास में किसानी के साथ-साथ खेती यानी बीज वपन, बिनाई, गोड़ाई, कटाई को भी रेखांकित करते हैं। इसमें भारत के विभिन्न अंचलों के साथ कैलिफोर्निया से लेकर चाइना तक की समस्याओं को एकमेक कर देते हैं। वे पात्रानुकूल अंग्रेजी, तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दों का प्रयोग करने से भी नहीं हिचकते हैं। वे विज्ञान और समाजविज्ञान के समरूप विकास को देश और विश्व के लिए हितकारी मानते हैं। इनके कथा-साहित्य का महत्व कलात्मक दृष्टि से कम और समाजशास्त्रीय दृष्टि से अधिक है।

Om Prakash Ravidas.

ओम प्रकाश रविदास